बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण की समीक्षा

‘न्याय दीपिका’ के आलोक में सौगत मत का खण्डन और जैन न्याय की स्थापना

प्रमाण, प्रमेय और यथार्थ ज्ञान का स्वरूप

www.jainkosh.org

दार्शनिक पृष्ठभूमि: प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है?

जैन मत

"विशद प्रतिभासम प्रत्यक्षम"

अर्थ:	जो ज्ञान स्पष्ट और निर्मल (विशद) है, वही प्रत्यक्ष है।
प्रकृति:	सविकल्पक (निर्णयात्मक)।

सौगत (बौद्ध) मत

"कल्पनापोढ़मभ्रान्तं प्रत्यक्षम्"

अर्थ:	जो ज्ञान कल्पना (विकल्प) से रहित और भ्रांति-रहित है, वही प्रत्यक्ष है।
प्रकृति:	निर्विकल्पक (विकल्प-रहित)।

इस प्रस्तुति का उद्देश्य सौगत (बौद्ध) मत की सूक्ष्म परीक्षा कर उसकी त्रुटियों को उजागर करना है।

www.Jainkosh.org

Gemini Notebook

सौगत मत (पूर्वपक्ष): प्रत्यक्ष की बौद्ध परिभाषा

कल्पनापोढ़मभ्रान्तं प्रत्यक्षम्
(तथागत दर्शन)

1. कल्पनापोढ़ (Kalpanapodham)	2. अभ्रान्त (Abhrantam)
• **परिभाषा:** सविकल्पक ज्ञान (भेद या निर्णय) की व्यावृत्ति।	• **परिभाषा:** आभास या मिथ्या ज्ञान का निराकरण।
• **मूल मान्यता:** सच्चा ज्ञान निर्विकल्पक है; इसमें 'यह अमुक वस्तु है' ऐसा कोई मानसिक विकल्प या निर्णय नहीं होता।	• **मूल मान्यता:** यह ज्ञान संशय और विपर्यय (भ्रांति) से पूरी तरह मुक्त होता है।

www.jainkosh.org

बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण के 4 प्रमुख स्तंभ

सौगत मान्यता (Buddhist Framework)

निर्विकल्पक
(Nirvikalpaka)

ज्ञान में कोई निश्चयात्मक विचार (determination) नहीं होता। मात्र शुद्ध संवेदन।

अर्थज
(Arthaja)

ज्ञान की उत्पत्ति बाह्य 'पदार्थ' (Object) से होती है। पदार्थ ही ज्ञान का जनक है।

तदाकार
(Tadakara)

ज्ञान उस बाह्य पदार्थ का आकार (रूप/रंग/गुण) धारण कर लेता है।

स्वलक्षण
(Svalakshana)

केवल क्षणभंगुर विशेष (Momentary Particular) ही सत्य है। 'सामान्य' (Universal/Continuity) मात्र एक झूठी कल्पना है।

www.jainkosh.org

खण्डन 1: निर्विकल्पक ज्ञान का विरोधाभास

दावा (The Claim)

ज्ञान निर्विकल्पक है (इसमें कोई 'निर्णय' या 'व्यवसाय' नहीं है)।

→

दोष (The Flaw)

यदि ज्ञान में निश्चयात्मकता (Decision) ही नहीं है, तो वह 'समारोप' (संशय/विपर्यय) का विरोध कैसे करेगा?

→

निष्कर्ष (The Conclusion)

समारोप का निराकरण किए बिना ज्ञान 'अभ्रान्त' (प्रमाण) नहीं हो सकता।

> **आचार्य का निष्कर्ष:** ऐसा प्रमाण रहित ज्ञान 'बाल चेष्टा' (Child's play) के समान है। प्रमाण की प्रामाणिकता 'व्यवसायात्मक' (निश्चयात्मक) होने में ही है।

खण्डन 2A: क्या ज्ञान पदार्थ से उत्पन्न होता है? (अर्थज मान्यता की समीक्षा)

सौगत मान्यता (Myth)

ज्ञान पदार्थ से उत्पन्न होता है।
पदार्थ कारण है, ज्ञान कार्य है।

जैन मान्यता (Reality)

ज्ञान 'ज्ञेय' (पदार्थ) के बिना नहीं होता,
परन्तु ज्ञेय से उत्पन्न भी नहीं होता।
ज्ञान की उत्पत्ति ज्ञान-स्वभाव (चेतना) से होती है।

ज्ञेय के बिना ज्ञान नहीं होता, लेकिन ज्ञेय से ज्ञान उत्पन्न नहीं होता।

www.jainkosh.org

खण्डन 2B: अन्वय-व्यतिरेक का तर्क (आलोक का दृष्टांत)

यदि पदार्थ/प्रकाश ज्ञान का कारण है, तो कारण के होने पर कार्य होना चाहिए **(अन्वय)**, और कारण के अभाव में कार्य नहीं होना चाहिए **(व्यतिरेक)**।

व्यतिरेक दोष	अन्वय दोष
प्रकाश नहीं है (कारण अनुपस्थित), फिर भी बिल्ली को ज्ञान होता है।	सूर्य का प्रकाश है (कारण उपस्थित), फिर भी उल्लू को ज्ञान नहीं होता।

निष्कर्ष: 'नार्थालोकौ कारणम्' – अर्थ (पदार्थ) और आलोक (प्रकाश) ज्ञान के जनक कारण नहीं हैं, वे मात्र **सहकारी निमित्त** हैं।

www.jainkosh.org

खण्डन 2C: पदार्थ और ज्ञान का स्वतंत्र परिणमन

वस्तु नहीं, फिर भी ज्ञान (केश-मशक भ्रांति)

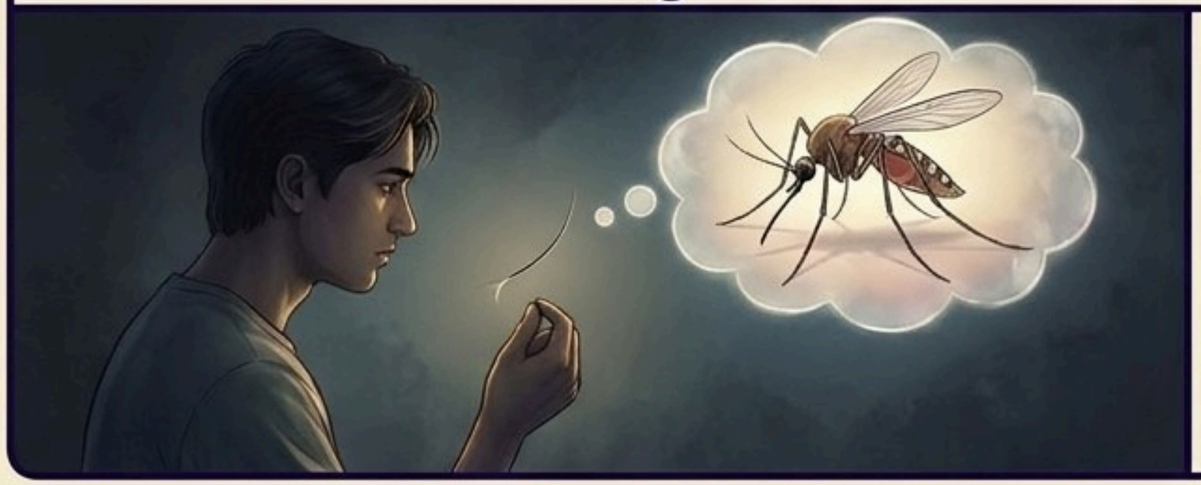

अंधकार में बाल (केश) को देखकर मच्छर (मशक) का ज्ञान होना। यहाँ 'मच्छर' रूपी पदार्थ नहीं है, फिर भी ज्ञान उत्पन्न हुआ।

वस्तु है, फिर भी ज्ञान नहीं (उपयोग का अभाव)

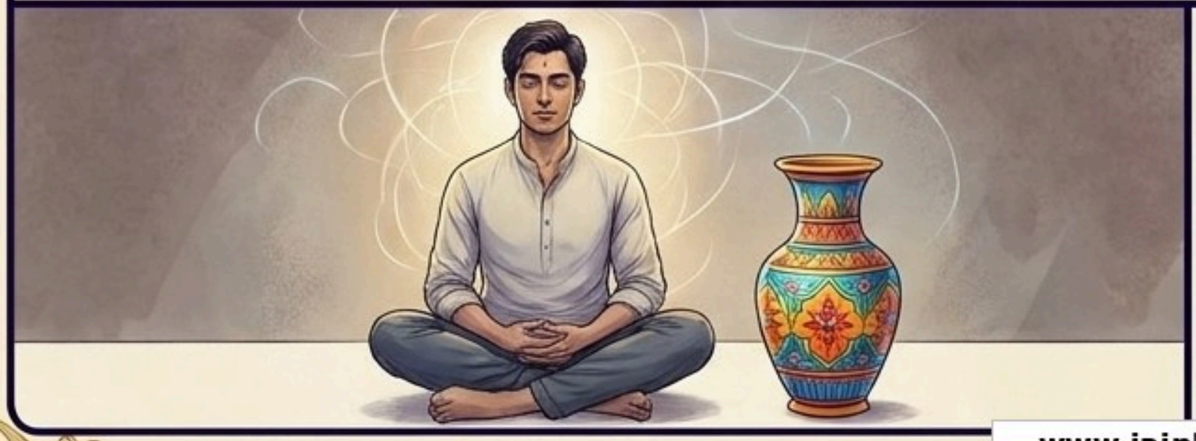

पदार्थ सामने उपस्थित है, किन्तु यदि आत्मा का 'उपयोग' (ध्यान) वहाँ नहीं है, तो पदार्थ ज्ञान उत्पन्न नहीं कर सकता।

खण्डन 3: तदाकार मान्यता का खण्डन (दर्पण का दृष्टांत)

सौगत मत:
ज्ञान पदार्थ के आकार (रूप/रंग) में परिणत होकर उसे जानता है।

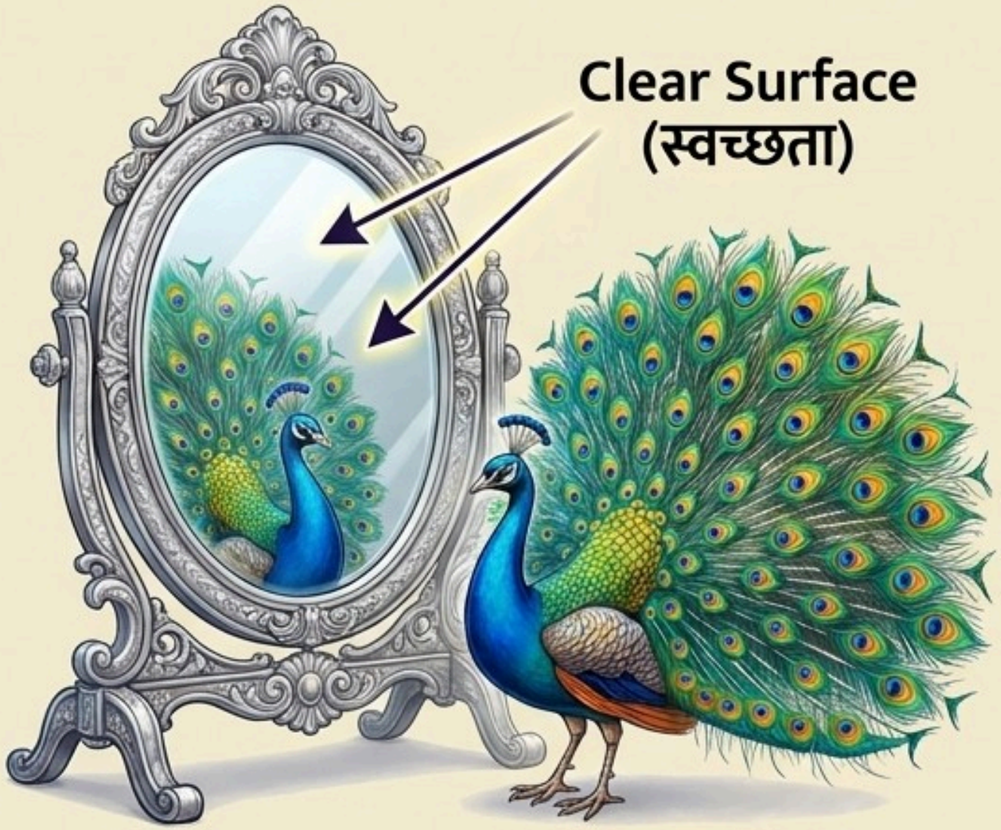

जैन मत:
ज्ञान 'ज्ञेयाकार' (वस्तु के आकार) को झलकाता अवश्य है, परन्तु स्वयं वस्तु रूप परिणमित नहीं होता।

जैसे दर्पण में मोर झलकता है, पर दर्पण स्वयं 'मोर' नहीं बन जाता।

दर्पण की स्वच्छता ही मोर को दिखाती है।

इसी प्रकार ज्ञान स्वयं 'ज्ञानाकार' ही रहता है, वह ज्ञेय (पदार्थ) का रंग या आकार नहीं चुराता।

www.jainkosh.org

खण्डन 4: सामान्य और स्वलक्षण (विशेष) की यथार्थता

सामान्य
(Universal)

प्रकार्य: अन्वय (Continuity).
'यह वही जीव है।'

जैन दृष्टि: यह प्रामाणिक और यथार्थ है। यह वस्तु की ध्रुवता (स्थायित्व) को सिद्ध करता है।

विशेष
(Particular / Svalakshana)

प्रकार्य: व्यावृत्ति (Differentiation).
'बालक, युवा नहीं है।'

जैन दृष्टि: यह भी प्रामाणिक है। यह वस्तु के क्षणिक पर्यायों (उत्पाद-व्यय) को सिद्ध करता है।

निष्कर्ष: बौद्ध केवल 'विशेष' को सत्य मानते हैं (एकांत)। जैन दर्शन में सामान्य और विशेष दोनों 'अर्थक्रियाकारी' (Functionally valid) और स्वलक्षण (अपने असाधारण स्वरूप वाले) हैं। दोनों परमार्थ सत्य हैं।

तुलनात्मक दृष्टि: सौगत ज्ञानमीमांसा बनाम जैन न्याय

आयाम (Dimensions)	सौगत मत (Buddhist View)	जैन न्याय (Jain View)
ज्ञान का स्वरूप (Nature of Perception)	निर्विकल्पक (बिना निर्णय के)	सविकल्पक (निर्णयात्मक और स्पष्ट)
उत्पत्ति का कारण (Cause of Knowledge)	अर्थज (बाह्य पदार्थ से उत्पन्न)	स्वावरण क्षयोपशम (आत्मा की निज योग्यता)
ज्ञान का आकार (Form of Knowledge)	तदाकार (पदार्थ का रूप ले लेता है)	ज्ञानाकार (दर्पणवत् स्वच्छता)
यथार्थता का विषय (Nature of Reality)	केवल स्वलक्षण (क्षणभंगुर विशेष) सत्य है	सामान्य और विशेष (अनेकांत) दोनों सत्य हैं

www.jainkosh.org

जैन न्याय का महा-सिद्धांत: 'योग्यता'

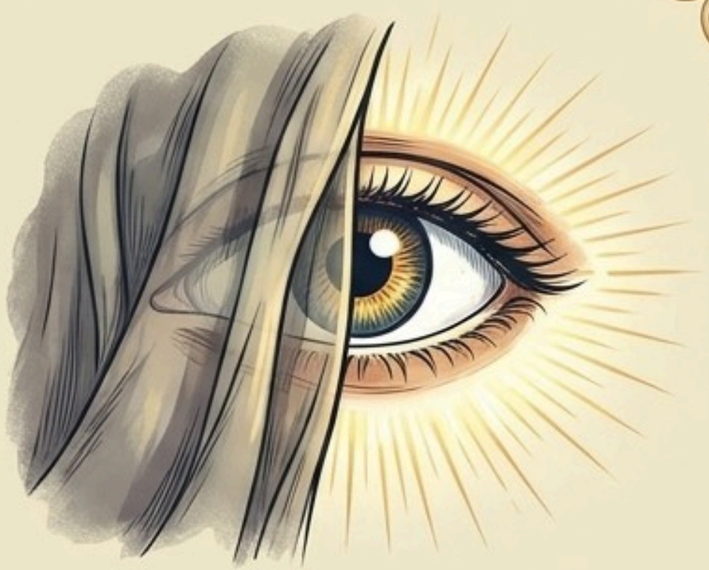

मूल प्रश्न: यदि पदार्थ ज्ञान को उत्पन्न नहीं करता, तो ज्ञा
ज्ञान यह कैसे निश्चित करता है कि 'यह अमुक वस्तु ही है'?
(विषय प्रतिनियम कैसे होता है?)

जैन उत्तर: योग्यता (Yogyata)

स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतार्थं व्यवस्थापयति।

अर्थ: ज्ञान की प्रतिनिश्चित व्यवस्था (Specific knowledge of a specific object)
आत्मा के 'स्व-आवरण' (अपने ज्ञानावरण कर्म) के क्षयोपशम (हटने/दबने) रूपी योग्यता से होती है।

www.jainkosh.org

क्षयोपशम का रहस्य (विद्युत का दृष्टांत)

बौद्ध आक्षेप

क्या हर अलग-अलग वस्तु (जैसे पेन, किताब, पहाड़) जानने के लिए अलग-अलग आवरण/कर्म होता है? यह तो असंभव है!

आचार्य का दृष्टांत: 220V ग्रिड

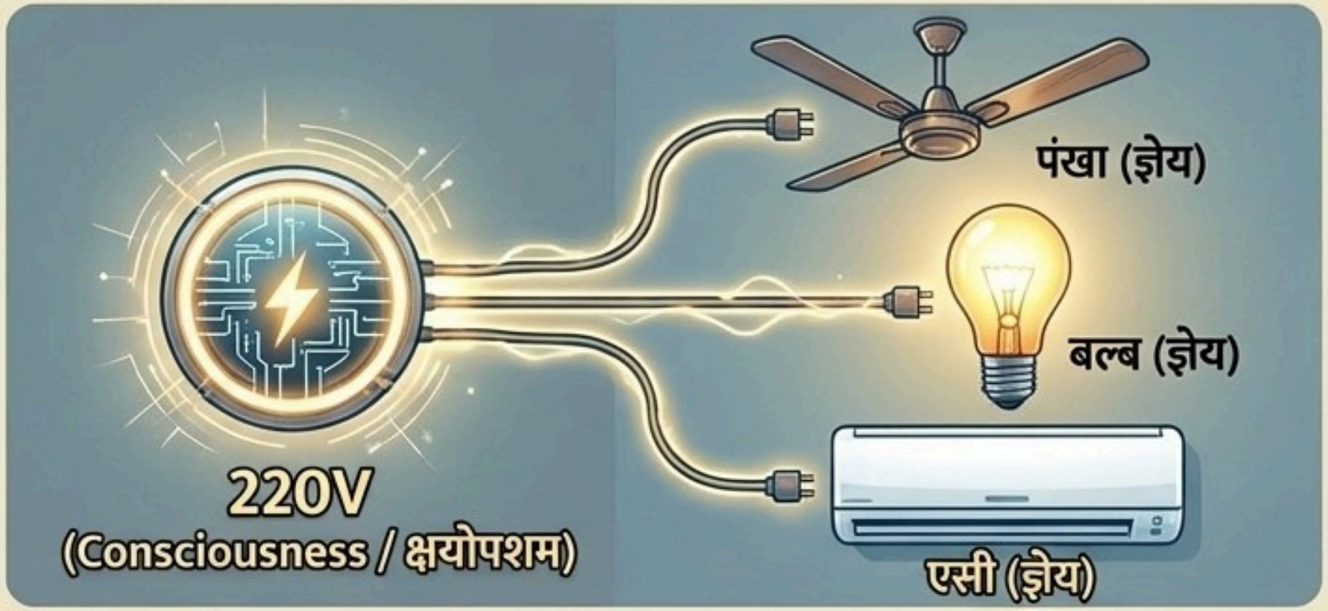

ज्ञान एक 'शक्ति' (Capability/Voltage) है। आपको पंखा, एसी, और लाइट के लिए अलग-अलग ग्रिड नहीं चाहिए। 220V की समग्र क्षमता **(क्षयोपशम)** से आप अपनी इच्छानुसार उपकरण (उपयोग) चला सकते हैं।

निष्कर्ष: जैसे-जैसे आवरण हटता है (निर्मलता बढ़ती है), जानने की क्षमता (Voltage) बढ़ती जाती है।

ज्ञान की जैन प्रक्रिया
(Master Blueprint of Knowing)

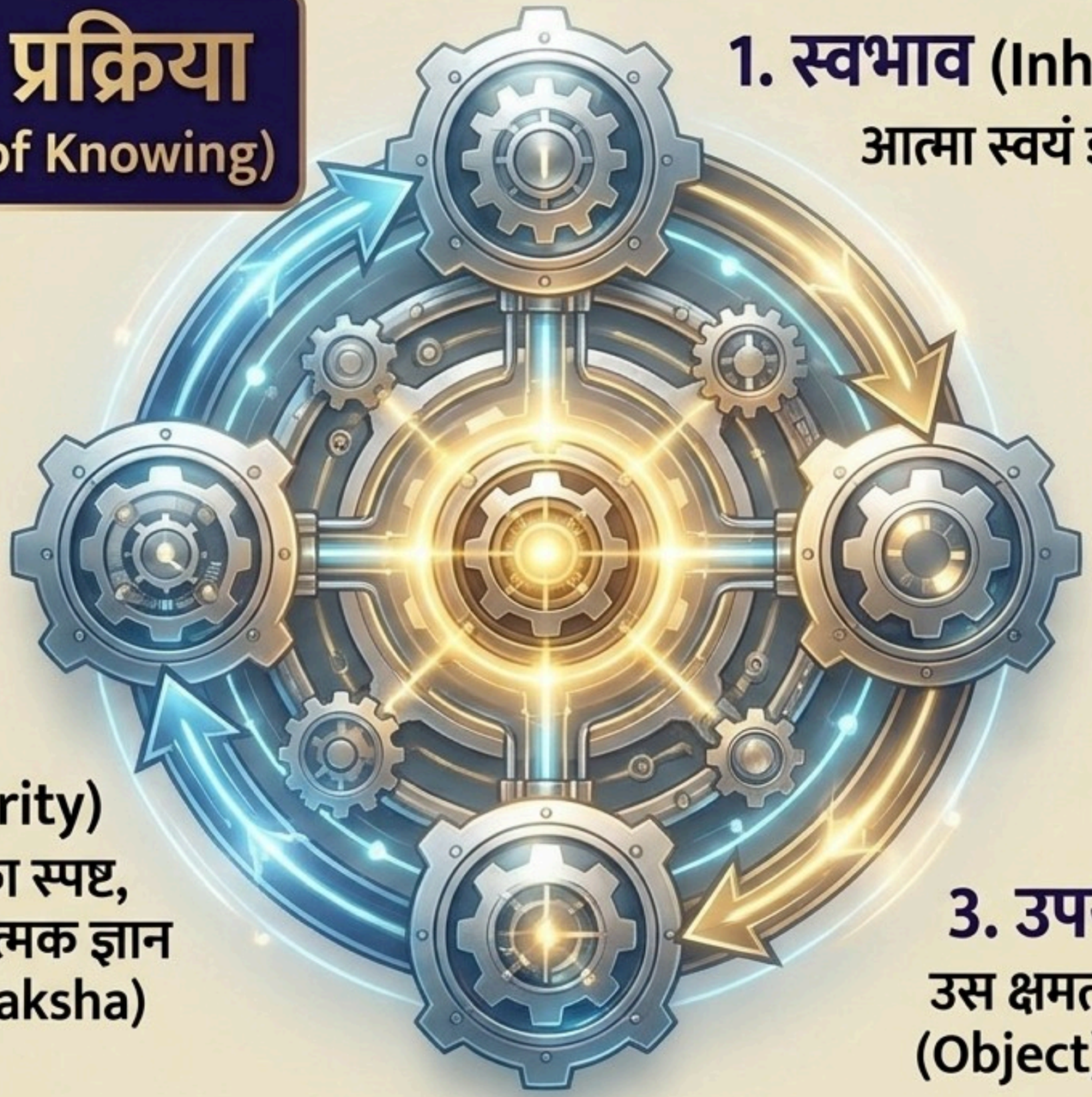

1. स्वभाव (Inherent Nature)

आत्मा स्वयं ज्ञानमय है।

2. क्षयोपशम (Capacity)

ज्ञानावरण कर्मों का हटना/दबना आत्मा को जानने की 'योग्यता' प्रदान करता है।

3. उपयोग (Attention)

उस क्षमता का किसी विशिष्ट ज्ञेय (Object) की ओर निर्देशित होना।

4. निर्मलता (Clarity)

परिणामस्वरूप वस्तु का स्पष्ट, सविकल्पक और निर्णयात्मक ज्ञान (Savikalpaka Pratyaksha) उत्पन्न होता है।

www.jainkosh.org

निष्कर्ष: अनेकांतवाद का विजय घोष

बौद्धों का 'निर्विकल्पक प्रत्यक्ष' खण्डित हुआ क्योंकि वह निर्णयात्मक शक्ति के बिना संशय का नाश नहीं कर सकता और वस्तु पर झूठी निर्भरता (अर्थज) रखता है।

जैन 'सविकल्पक प्रत्यक्ष' सिद्ध हुआ क्योंकि वह आत्मा की निज क्षमता (क्षयोपशम) को पहचानता है, और सामान्य-विशेष दोनों की यथार्थता को स्वीकार करता है।

जा वाणी के ज्ञान ते सूझे लोकालोक...

(उस ज्ञान रूपी वाणी को मस्तक झुकाकर सदा प्रणाम है जो संपूर्ण विश्व को प्रकाशित करती है।)

www.Jainkosh.org

Gemini Notebook